वेद ऊब की नहीं स्वीकृत
तांत्रिक

आदि शक्ति दुर्गा एवं उनकी शक्तियाँ

लेख एवं चित्र – डॉ0 कमल प्रकाश अग्रवाल

दुर्गा शब्द द, उ, र, ग और आ से मिलकर बना है । दैत्यों (अमानवीय व्यवहार वाले अमानुष) के नाश का प्रतीक "द" है । "उ" विघ्न नाशक है, "र" रोग नाशक है, "ग" पाप नाशक है और "आ" भय तथा शत्रु विनाशक है । यह अर्थ ही दुर्गा नाम का यथार्थ बोधक है ।

विद्युत शक्ति, आकर्षण शक्ति, मोहन शक्ति, उष्णता, बल, प्रकाश, पंच तत्व (पृथ्वी–जल–अग्नि–वायु–आकाश), बुद्धि, विवेक, आत्मबल, इच्छा–शक्ति, मनुष्य की आन्तरिक शक्ति है । प्रकृति की (सत, रज, तम) त्रिगुणात्मक शक्ति है । शक्ति के सभी नाम ही दुर्गा का स्वरूप है । मनुष्य के मूलाधार चक्र में सुप्त शक्ति को ही कुण्डलिनी (सर्पेन्ट पावर या विद्युत वलययिता) कहते हैं । संसार का भरण–पोषण करने के कारण "अन्नपूर्णा" कहते हैं । काम, मद, मोह आदि शत्रु से रक्षा करने में समर्थ के कारण 'दुर्गा' है । इनके तंत्र शास्त्र में दुर्गा सहत्रनाम, दुर्गा शतनाम अत्यन्त प्रसिद्ध है । दुर्गा सप्तशती, रूद्रचण्डी, देवी भागवत पुराण, कालिका पुराण, मंत्र महाणर्व, जैसे सैंकड़ों तांत्रिक ग्रंथ हैं ।

दुर्गा की उत्पत्ति :

पुराण कथा के अनुसार महिषासुर की आलस्य और तमोगुण प्रवृत्ति का अधिक प्रभाव पृथ्वी पर छा जाने पर देवताओं ने विष्णु से प्रार्थना की तब उन्होंने अपनी योग निद्रा से एक शक्ति का आवाहन किया, उस शक्ति का भूतनाथ ने अपने दैदीप्यमान तेज से मुख रचा । यम ने अपने तेज से काले घने नितम्ब चुम्बी कैश बनाये । अग्नि ने अपनी लपटों का तेज एवं कृष्ण, लाल, श्वेत रंग के त्रिनेत्र भाल पर सुशोभित किये । संध्या ने अपने तेज से धनुष की प्रत्यंचा सी सुन्दर भौंह रच डाली । वायु ने कर्ण के कुण्डल । कुबेर ने मनोहारी सुन्दर तिल के फूल के समान नासिका प्रदान की । प्रजापति ने दाडिम के दानों सी सुन्दर दन्तावलि बनायी । कार्तिकेय ने ऊपर का होंठ । अरूण ने अधर का होठ बनाया । विष्णु ने अपने तेज से अठारह भुजायें । वसु ने सुन्दर हाथों की अंगुलियाँ । चन्द्रमा ने वक्षस्थल पर दो अमृत कलश स्थापित किये । इन्द्र ने सिंह वाहिनी का केहरी कटि प्रदेश । वरूण ने जंघाओं तथा पिण्डलियों का निर्माण । पृथ्वी ने नितम्ब पृष्ठ सजायें । विश्वकर्मा ने दिव्य वस्त्र दिव्य हार, दिव्य चूणामणि दी, कुण्डल, कड़ा तथा कंकण पहनायें त्वष्ठा ने सुन्दर नुपुर, कंठहार और रत्न जड़ित मुद्रिकायें । वरूण ने वैजयन्ती माल, हिमवान ने सवारी को सुनहरा सिंह प्रदान किया । महिषासुर का मर्दन के लिए शंकर ने त्रिशूल । वरूण ने पाश एवं शंख । अग्नि ने शतघ्नी । पवन ने वाणों से पूरित तरकश एवं धनुष भेंट किया । इन्द्र ने श्रेष्ठ घंटा, वज्र एवं काल दण्ड

का प्रतीक दण्ड भेंट किया । विश्वकर्मा ने करारी धार वाला फरसा । ब्रह्मा ने गंगाजल पूरित कमंडल । कुबेर ने मधुप भरा स्वर्ण पात्र एवं फूलों का दिव्य हार । त्वष्ठा ने सैकड़ों घंटिकाओं युक्त कौमोद की गदा तथा अमोध कवच देवी को प्रदान किया । सूर्य ने अपनी किरणों का तेज प्रदान कर संहार करने की शक्ति दी ।

नौ देवियाँ और नौं दिव्य औषधियाँ :

आयुर्वेद और दुर्गा सप्तशती के कवच के रहस्यात्मक मंत्रों से प्रतीत होता है कि दुर्गा के नौ दैवियों का भावार्थ नौ महाऔषधियों से है (1) शैल पुत्री का हरड से (हिमावती,) (2) ब्रह्मचारिणी का अर्थ ब्राह्मी (3) चन्द्रघण्टा का अर्थ चन्द्रसूर या चमसूर है जो धनिया के तरह हरे पत्तों का पौधा है (4) कुष्माण्डा है जिसका अर्थ पेठा है । (5) स्कन्दमाता का अर्थ अलसी है (6) कात्यायनी का अर्थ अम्बा या अम्बालिका खटास युक्त फल है (7) कालरात्रि को नागदौन कहा जाता है जिसका पौधा घरों के शोभा उद्यान में लगाने से घर के सभी कष्ट दूर होने लगते हैं (8) महागौरी का अर्थ सर्वत्र सुलभ तुलसी है (9) सिद्धीदात्री का अर्थ शतावरी है जो बल तथा वीर्य देने वाली वस्तु है । इसके अतिरिक्त दुर्गा कवच में घुम्राक्ष राक्षस रूपी कैंसर को मारने की औषधि में गिलोय, प्रमुख है । इसी कवच में वर्तमान में व्याप्त एड्स (ओजक्षय) के लिए आँवले का रस शहद में मिलाकर लेना चाहिए । दुर्गा सप्तशती में वर्णित त्र्यम्बक (गो–मूत्र, गोबर का रस, गौ–दुग्ध) की समान मात्रा पंचगव्य (उपरोक्त तीनों, गोदधि, गौ धृत की समान मात्रा), पंचामृत (गो दुग्ध, गौ धृत, गंगाजल, गौ दधि, शहद तथा तुलसी) हैं ।

दशमहाविद्यायें :

नव चण्डी के परा विद्या सम्बन्धी दशभाव हैं जिनमें क्रियात्मक भाव पंच मात्रायें (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) तथा तत्वात्मक भाव पंच ज्ञानेन्द्रियाँ क्रमशः (नाक, जिव्हा, आँख, त्वचा, कान) हैं इन दश भावों से मिलकर ही दश महाविद्यायें बनी हैं । मातंगी, भुवनेश्वरी, भैरवी, बगुला, त्रिपुरा, तारा, कमला, काली, धूमावती तथा छिन्नमस्ता । दश अवतार मीन, कूर्म, वाराह, नृसिंह, बामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, एवं कल्कि का सम्बन्ध इन दश महाविद्याओं से ही है ।

इक्यावन शक्तिपीठ :

देवी भागवत पुराण के अनुसार प्रजापति दक्ष ने जब अपने "बृहस्पतिसव" यज्ञ में सभी देवताओं को आमंत्रित किया परन्तु अहंकारवश अपनी पुत्री एवं जमाता कैलाशपति शंकर को निमंत्रण नहीं दिया

तब शैलसुता पति के अपमान को न सह सकने से सती ने यज्ञकुण्ड के उत्तर बैठकर योगाग्नि द्वारा अपने प्राणों की आहुति दे दी तब भगवान शिव शोकाकुल होकर सती के शव को लेकर यत्र तत्र भटकने लगे विष्णु ने शव में प्रवेश कर चक्र से टुकड़े-टुकड़े कर दिये, जिन स्थान पर यह टुकड़े गिरे उन स्थानों पर एक दिव्य शक्ति की स्थापना हुई जो कालान्तर में "शक्ति पीठ" कहलाये । यह शक्ति पीठ 51 कहलाते हैं जिनमें प्रमुख कामाख्या (कामरूप), अन्नपूर्णा (काशी), केदार, पूर्णागिरि, जालंधर, श्रीपीठ, देवीपीठ, गोकर्ण, जयन्ती, उज्जविनी, प्रयाग, श्री शैल, उड्डीयान, शाकुम्भरी, नैनादेवी, विन्ध्यवासिनी इत्यादि हैं । यहाँ एक रहस्यमय बात प्रकट होती है कि "अ" से लेकर "क्ष" तक 51 अक्षरों की वर्णमाला है ऐसा लगता है इन अक्षरों के आधार पर ही पीठों की स्थापना हुई है ।

षोडस मातृकायें :

शुभ कार्यो एवं यज्ञ मण्डप में षोडस मातृकायें हैं जिन्हें गौरी, पदमा, शची, मेघा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शान्ति, पुष्टि, घृति, क्षमा, इष्ट देवी, कुलदेवी कहा जाता है लेकिन तांत्रिकों के विचार से (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, और अं, अः) वर्ण मातृकायें ही षोडस मातृकायें हैं जिनके बिना कोई पद तथा वाक्य की रचना नहीं होती ।

चौंसठ योगिनियाँ :

वास्तु पूजा तथा मण्डप पूजन में मण्डप के नैऋर्त्य कोण में पूजित चौसठ योगिनियों का पूजन है जो वांछित फल प्रदान करने वाली, धन संतान को देने वाली तथ प्रसन्न होने पर दारिद्रयता नाश करने वाली है । वास्तव में भूख और पाप से उत्पन्न अनन्त सत्ता में विश्वास वाली वह सभी शक्तियाँ हैं जिनका स्वरूप व आकार मानवीय नहीं है । मनुष्यों द्वारा अज्ञान और दुःख निराशा को आश्रय देने पर आलस्य और प्रमाद से उत्पन्न होने वाली कुरूपा, विध्वंशकारी शक्तियों का नाम ही योगिनी है ।

पंचमकार : (वाममार्ग)

तांत्रिकों ने शक्ति की साधना के लिए पंचमकार (वाममार्ग) बताया है । पंचमकार (मद्य, मांस, मुद्रा, मत्स्य, मैथुन) यदि प्रतीकात्मक शब्दों की गूढ़ व्याख्या की जावे तो प्रज्ञावान योगी को वाममार्गी ही कहा जाता है । जो योगी ब्रह्मरन्ध्र सहस्त्र दल से स्रवित होते हुए अमृत का पान करते हैं । शरीर रूपी ब्रह्माण्ड को तृप्त करने वाली सुधा धारा पान करने को मद्य कहते हैं । पुण्य पाप रूपी पशु को ज्ञान रूपी खड्ग से मारकर जो योगी मन को ब्रह्म में लीन करता है वह मांसाहारी है । मन सहित समस्त इन्द्रियों को वश में

करके आत्मा में लगाने वालों को मत्स्य आहारी कहते हैं । आशा तृष्णा आदि आठ मुद्रा को ब्रह्मरूपी अग्नि में पकाकर दिव्य भाव का अनुरागी हिंसा से परामुख होकर सावधान मन से भक्षण करें । वहीं पुरूष संसार में शिव होकर रूद्र तुल्य होता है । परमानन्द को प्राप्त हुई । सूक्ष्म रूप वाली सुषुम्ना नाड़ी है वहीं आलिंगन करने योग्य कान्ता है । सुषुम्ना का सहस्सार चक्र में परि ब्रह्म से संयोग ही मैथुन है, स्त्री सम्भोग का नहीं ।

बिन्दुसाधना :

बिन्दु साधना यंत्र के केन्द्र में स्थित बिन्दु पर त्राटक को कहते हैं । स्त्री पुरूष को सम्भोग से उत्पन्न रज वीर्य के मिलन को तान्त्रिक बिन्दु कहा जाता है । सम्भोग के बाद वीर्य स्खलन को बिन्दु क्षय कहते हैं । बिन्दु क्षय न हो ऐसा तान्त्रिक उपासना का प्रथम ध्येय है । यदि साधन योनि मुद्रा का अभ्यास करें तो वीर्य की रक्षा करने में समर्थ हो जाता है ।

स्वास्थ्य और ऐश्वर्य की इच्छा रखने वालों को अष्ठमी का उपवास कर चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान करना चाहिए । बुधवार को पड़ने वाली अष्टमी बुधाष्टमी कहलाती है । अष्टमी चन्द्रमा की मध्यकला है और बुधवार भी मध्यवार है जिसका प्रभाव मस्तिक पर अधिक रहता है । अष्टमी को मन पर चन्द्रमा का सबसे अधिक प्रभाव रहता है ।

चक्रपाणि हर्बल रिसर्च फाउन्डेशन
श्रीधाम – 47, हुसैनी बाजार
चन्दौसी – 202 412
मो० 9927311629.

फोन- 05921-51598
-52620
-50311